प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त

प्लेटो यूनान का एक महान राजनीतिक विचारक था। उसकी महान रचना का नाम Republic हैं। अपने इस प्रसिद्ध ग्रंथ में प्लेटो ने लिखा हैं-," सभी आधुनिक राज्यों का विधान और शासन असंतोषजनक हैं। प्रत्येक राज्य की यही दशा हैं। अत: बाध्य होकर मुझे इस निष्कर्ष को स्वीकार करना पड़ा कि इस समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब सही शिक्षा को ही राज्यों और व्यक्तियों के आचारण का आधार माना जाए।"

यदि रिपब्लिक का मूल उद्देश्य 'न्याय' के सिद्धान्तों की खोज है तो शिक्षा उसकी प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत एवं माध्यम हैं।
प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य की योजना में शिक्षा की आवश्यकता, शिक्षा के महत्व तथा नई शिक्षा के कार्यक्रम का विशद् वर्णन किया हैं। प्लेटो के इन विचारों से रूसों बहुत प्रभावित हुआ और उसने कहा," रिपब्लिक, शिक्षाशास्त्र पर लिखा गया सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ हैं।"

शिक्षा का तात्पर्य
प्लेटो के अनुसार शिक्षा सामाजिक बुराईयों को नष्ट करने का प्रत्यन हैं तथा त्रुटिपूर्ण जीवन को सुधारने की एक योजना हैं। प्लेटो का कहना है कि," शिक्षा बौद्धिक बुराई के लिए बौद्धिक उपचार हैं। प्लेटो की शिक्षा के दो रूप हैं– दार्शनिक पक्ष तथा सामाजिक पक्ष। दार्शनिकता के विषय में प्लेटो ने कहा है कि," शिक्षा निरपेक्ष सत्य के दर्शन का एक साधन है और यह सत्य आत्मा का दर्शन हैं तथा सामाजिक पक्ष के संबंध में प्लेटो ने कहा हैं कि," शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया हैं, जो व्यक्तियों को समाज के प्रति कर्त्तव्यों का ज्ञान कराती हैं।

शिक्षा का महत्व
प्लेटो ने शिक्षा को बहुत महत्व दिया हैं। प्लेटो के अनुसार शिक्षा का तात्पर्य आत्मा को ऐसी परिस्थिति में ले जाना है जो उसके विकास की प्रत्येक अवस्था में सबसे उपयुक्त हो। शिक्षा निरपेक्ष दर्शन का साधन है और यह सत्य आत्मा का दर्शन हैं। जिस प्रकार शरीर भोजन के बिना नहीं रह सकता। उसी तरह आत्मा अपनी क्रियाओं के लिये शिक्षा-रूपी आध्यात्मिक भोजन पर निर्भर हैं।

प्लेटो राज्य को श्रेष्ठ शिक्षा का साधन मानता हैं। उसके अनुसार सही शिक्षा से जीवन के मार्ग की अनेक कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। व्यक्ति को विवेकशील और अपने कार्य के प्रति निष्ठावान बनाने का यह रचनात्मक (Positive) उपाय हैं।

सैबाइन के अनुसार," प्लेटो के दृष्टिकोण से शिक्षा की उत्तम व्यवस्था से लगभग प्रत्येक सुधार संभव हैं।